International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निर्धनता और भारतीय अर्थव्यवस्था

Anita Goyal
Assistant Professor (Guest Faculty)
Vaish College, Bhiwani.

सारांश :- मनुष्य का न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम न होना निर्धानता कहलाती है। निर्धानता से बच्चे कुपोषित स्थिति में रह जाते हैं। निर्धानता अपने आप में निर्धानता लाती है। निर्धानता से समाज में आय व सम्पत्ति का असमान बँटवारा होता है। जो वर्ग सक्षम है या अमीर है वह और अमीर हो जाता है जबकि गरीब वर्ग और गरीब होता जाता है। भारत में निर्धानता की स्थिति को कैलोरी मानदंड के आधाार पर बाँटा गया है। स्वतंत्रा प्राप्त हुए हमें 72 वर्ष हो गए हैं फिर भी हमारी जनसंख्या का 21.9 प्रतिशत भाग निर्धान है अर्थात् उनकी मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी नहीं होती है।

संकेत शब्द :-(निर्धानता, प्रति व्यक्ति आय, U.N.O., Malnutrition)

भूमिका :- निर्धानता से अभिप्राय है न्यूनतम आवश्यकताओं की प्राप्ति में असक्षम होना। इन न्यूनतम आवश्यकताओं में हम भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं आदि को शामिल करते हैं। इन आवश्यकताओं की प्राप्ति न होने पर व्यक्ति को कष्ट होता है। निर्धान व्यक्ति समाज पर अनावश्यक भार डालता है क्योंकि वह देश के विकास में कोई योगदान नहीं देता है। निर्धानता के कारण व्यक्ति के अंदर विभिन्न प्रकार की हीन भावनाएँ भर जाती हैं। वह निर्धानता के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानता है। निर्धानता व्यक्ति की कार्यकुशलता में कमी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लाती है। इससे मनुष्य का मनोबल टूटता है और निर्धान व्यक्ति के लिए अपना तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करना कठिन हो जाता है। निर्धानता व्यक्ति के जीवन-स्तर में कमी लाती है। निर्धानता अपने आप में निर्धानता लाती है अर्थात् एक बार व्यक्ति निर्धानता के जाल में फँसता है तो आगे फँसता चला जाता है।

भारत में निर्धानता की प्रवृत्तियाँ :- वर्तमान में भारत को आजाद हुए 72 वर्ष हो चुके हैं लेकिन आज भी हमारे देश की लगभग 21.9: जनसंख्या निर्धान है। भारत में निर्धानता की स्थिति को कैलोरी मानदंड के आधाार पर विभाजित किया जाता है। कैलोरी मानदण्ड शहरी और ग्रामीण क्षेत्रें में भिन्न-भिन्न है। ग्रामीण क्षेत्रें में औसत कैलोरी की आवश्यकता 2,435 तथा शहरी क्षेत्रें में औसत कैलोरी की आवश्यकता 2,045 निर्धाारित की गई है। जो व्यक्ति इस निश्चित कैलोरी मानदंड से अधिाक का उपभोग करता है तो उसे अनिर्धान मान लिया जाता है और निर्धान उनको माना जाता है जिनका उपभोग स्तर इस निश्चित कैलोरी मानदंड से कम होता है। भारत में विश्व के निर्धानों की कुल संख्या के पाँचवें हिस्से से अधिाक लोग केवल भारत में रहते हैं। भारत में निर्धानता की प्रवृत्तियाँ तालिका के माधयम से स्पष्ट हो जाती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तलिका - भारत में निर्धानता की प्रवृत्तियाँ

वर्श	निर्धानों की संख्या (करोड़ में)	कुल जनंसख्या में निर्धानों का प्रतिषत
1960-61	17	34
1964-65	22	46
1970-71	25	45
1973-74	32	46
1979-80	33	48
1986-87	27	34
1987-88	31	39.3
1993-94	32	36
1996-97	27	29.18
1999-2000	26	26
2004-05	40.7	37.2
2009-10	35.46	29.8
2011-12	26.93	21.9

(Source:- Economic Survey, 2013-14 and Planning Commission)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

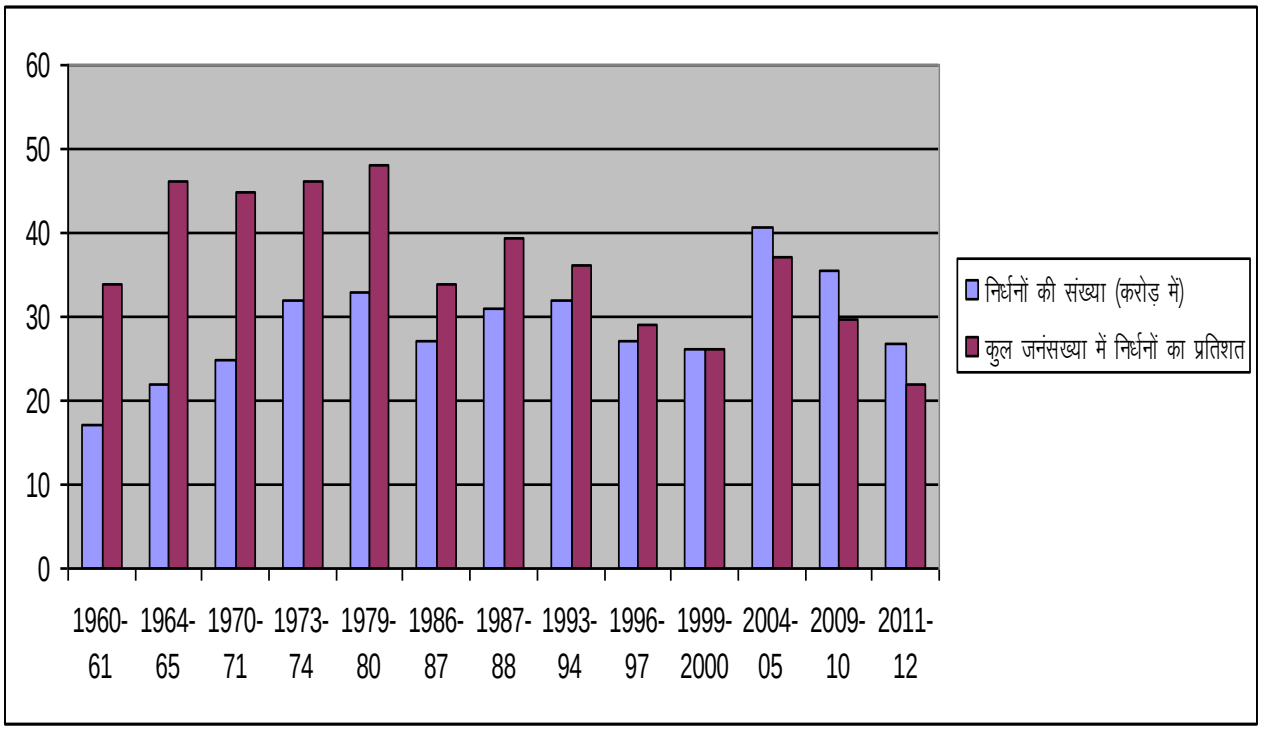

भारत में वर्ष 1960-61 में 17 करोड़ लोग गरीब थे अर्थात् कुल जनसंख्या का 34 प्रतिशत भाग निर्धानता रेखा से नीच रह रहा था। 1979-80 में 33 करोड़ लोग अर्थात् कुल जनसंख्या का 48 प्रतिशत भाग निर्धानता रेखा से नीचे रह रहा था। वर्ष 2011-12 में 26.93 करोड़ लोग अर्थात् कुल जनसंख्या का 21.9 प्रतिशत भाग निर्धानता रेखा से नीचे रह रहा था।

भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में निर्धानता :-

भारत का कुल राष्ट्रोय उत्पादन जनसंख्या की तुलना में कफी कम है। भारत का "kq) राष्ट्रोय उत्पादन 2016-17 में 2011-12 की कीमतों के आधाार पर 1,08,86,776 करोड़ था तथा प्रति व्यक्ति आय 82,269 थी जो U.N.O. के अनुसार बहुत अधिाक निर्धान देशों की है। योजनाओं की अवधि में देश की विकास दर 5 प्रतिशत रही है जबकि जनसंख्या वृ) दर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2 प्रतिशत के आस-पास रहने से प्रति व्यक्ति आय में केवल 3 प्रतिशत वृ) हुई है जिस कारण निर्धानता की स्थिति बनी हुई है। जनसंख्या का तेजी से बढ़ना मशीनीकरण, कीमतों में तेजी से वृ) होना, आधाारभूत सरंचना का अभाव, पूँजी की कमी, बेरोजगारी, पुरानी सामाजिक रूढ़ियाँ, निपुण उद्यमियों का अभाव ऐसे कई कारण है जिससे वर्तमान में भी हमारी 21.9 प्रतिशत जनसंख्या गरीब है। निर्धानता की स्थिति का एक महत्वपूर्ण कारण आय का असमान वितरण भी है। आय के असमान वितरण से धानी वर्ग तो धानी होता जा रहा है जबकि निर्धान वर्ग निर्धान होता जा रहा है अर्थात् निर्धान वर्ग को अपने जीवन-निर्वाह के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। निर्धानता के कारण गरीब वर्ग विशेषकर बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे हैं।

निधनता दर् करने के उपाय :-

निर्धानता को हम आर्थिक विकास की दर को बढ़ाकर दूर कर सकते हैं। ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार उपलब्धा करवाकर हम निर्धानता से मुक्ति पा सकते हैं जनंसख्या वृ) पर नियंत्र्ण करके, आय व सम्पत्ति के बँटवारे में समानता लाकर, कृषि क्षेत्र का विकास करके कीमतों में स्थिरता लाकर तथा गरीब वर्ग को सामान्य उपभोग वाली वस्तुओं को राशन की दुकानों के माधयम से उपलब्धा करवाकर हम निर्धानता से छुटकारा पा सकते हैं। पूँजी प्रधाान तकनीक का प्रयोग कम से कम करके श्रम प्रधाान तकनीक का प्रयोग किया जाए। सरकार के द्वारा विभिन्न योजनाएँ चलाई जाएँ ताकि निर्धानता का उन्मूलन किया जाए।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि निर्धानता एक राष्ट्रोय समस्या नहीं बल्कि अंतराष्ट्रोय समस्या है जिसके समाधाान के लिए सरकार के साथ-साथ निजी क्षेत्र तथा आम जनता का भी सहयोग जरूरी है।

REFERENCES:

- Indian Economy (Datt and sundharm's)- Gaurav Datt, Ashwani Mahajan.
- Indian Economy – V.K. Ohri, T.R. Jain
- Poverty and Unempployment – B.D. Sharma.
- Economic and Social Issues in India – Dhrub Kumar.
- Indian Economic Problems – Dr. Chaturbhuj Mamoria, Dr. Satish Kumar Saha.
- Poverty and Income distribution in India – Amartya sen, Abhijit Vinayak Banerjee, Pranab Bardhan, Rohini Somanathan, T.R. Srinivasan.
- Poverty and Famines- Amartya sen.
- What Explain Poverty in India – Chandra Sekhar, Gupta Boggarapu.
- Poverty – Ruth Lister.
- Poverty in India – K.R. Gupta.
- Rural Poverty in India - B.C. Mehta.
- Economic survey, 2013-14 and Planning Commission.